ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या-३०
दिनांक- मंगलवार, २० अप्रैल, २०२१

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 34.9 एवं 20.6 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 73 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 39 प्रतिशत, हवा की औसत गति 5.1 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 6.5 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 8.8 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 25.8 एवं दोपहर में 36.4 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(21–25 अप्रैल 2021)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 21–25 अप्रैल, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के से मध्यम बादल आ सकते है। २१–२२ अप्रैल को उत्तर पश्चिम बिहार के जिलों (पूर्वी तथा पश्चिमी चम्पारण, सारण, गोपालगंज, सिवान) में कहीं–कहीं हल्की बूंदा बूंदी हो सकती है। अन्यों जिलों में एक–दो स्थानों पर भी इसकी संभावना है। दो दिनों के बाद अर्थात 23 तारीख से पछिया हवा चलने के कारण मौसम शुष्क एवं तापमान में बढ़ोतरी होने की संभावना है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 36–40 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकता है। जबकि न्यूनतम तापमान 22–26 डिग्री सेल्सियस के आस–पास रह सकता है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 50 से 60 प्रतिशत तथा दोपहर में 30 से 35 प्रतिशत रहने की संभावना है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 11 से 15 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से अगले दो दिनों तक पुरवा हवा तथा उसके बाद पछिया हवा चलने की सम्भावना है।
- सामान्य सलाह– कोरोना वायरस के संक्रमण को ध्यान में रखते हुए खेतो में एक–दूसरे के बीच सामाजिक दूरी (अर्थात कम से कम 1 मीटर यानी 3 फीट की दूरी) बनाए रखें तथा हमेशा मास्क लगाएं।

• समसामयिक सुझाव

- किसानों को सलाह दी जाती है कि २१–२२ अप्रैल को कुछ जिलों में हल्की हल्की बूंदा–बूंदी की संभावना को देखते हुए कृषि कार्यो में सर्तकता बरतने की आवष्यकता है। गेहूं अरहर तथा रवी मक्का की कटनी तथा सुखाने का काम सावधानी पूर्वक करें।
- आम के पेड़ में मिलीबग (दहिया कीट) की निगरानी करें। यह कीट चिपटे गोल आकार के पंखहीन तथा शरीर पर सफेद दही के रंग का पॉउडर चिपका रहता है। यह आम के पेड़ में मुलायम डालों और मंजर वाले भाग में बहुतो की संख्या में चिपका हुआ देखा जा सकता है तथा यह उन हिस्सों से लागातार रस चुसता रहता है जिससे अक्रान्त भाग सुख जाता है तथा मंजर झड़ जाते हैं। इस कीट से रोकथाम हेतु डाइमेथोएट 30 ई0सी0दवा का 1.0 मि0ली0/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर पेड़ पर समान रुप से छिडकाव करें। फल बनने के दौरान आम के बगीचे में नमी का रहना अति आवष्यक है।
- लीची के पेड़ में फल बेधक कीट के षिषु जो उजले रंग के होते हैं। यह फलों के डंठल के पास से फलो में प्रवेष कर गुद् को खाते हैं जिससे प्रभावित फल खाने लायक नहीं रहता। इस कीट से वचाव हेतु लीची के पत्तियों एवं टहनियों पर प्रोफेनोफॉस 50 ई0सी0 का 10 मि0ली0 या कार्बारिल 50 प्रतिषत घुलनषील पॉवडर का 20 ग्राम दवा को 10 लीटर पानी में घोलकर अप्रैल माह में 15 दिनों के अन्तराल पर प्रति पेड़ की दर से दो छिड़काव करें। किसान भाई लीची के बगीचों में नमी बनाये रखें।
- विगत माह में बोयी गई मूंग व उरद् की फसलों में निकाई–गुराई एवं बछनी करें। इन फसलों में सघन रोमोवाली सुंडिया की निगरानी करें। इनके सुंडियो के शरीर के उपर काफी घने बाल पाये जाते है। यह मूंग एवं उरद् के पौधों के कोमल भागों विषेषकर पत्तियों को खाती है। इनकी संख्या अधिक रहने पर कभी–कभी केवल डण्ठल ही शेष रह जाती है। इस प्रकार इस कीट से फसल को काफी नुकसान एवं उपज में काफी कमी आती है। रोक–थाम हेतु फसल में मिथाइल पैराथियान 50 ई0सी0 दवा का 2 मि0ली0/लीटर या क्लोरपाईरिफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2.5 मि0ली0/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल में छिडकाव करें।
- लत्तर वाली सब्जियों जैसे नेनुआ, करैला, लौकी (कद्दू), और खीरा में लाल भृंग कीट से बचाव हेतु डाइक्लोरवॉस 76 इ0सी0/ 1 मि0ली0 प्रति ली0 पानी की दर से आसमान साफ रहने पर ही छिड़काव करे।
- ओल की फसल की रोपाई शीघ्र संपन्न करें। रोपाई के लिए गजेन्द्र किस्म अनुषंसित है। ओल की कटे कन्द को ट्राइकोर्डमा भिरीडी दवा के 5.0 ग्राम प्रति लीटर गोबर के घोल में मिलाकर 20–25 मिनट तक डुबोकर रखने के बाद कन्द को निकालकर छाया में 10–15 मिनट तक सुखने दें उसके बाद उपचारित कन्द को लगायें ताकि मिट्टी जनित बीमारी लगने की संभावना को रोका जा सके तथा अच्छी उपज प्राप्त हो सके।
- गर्मीयो में दुधारू पशुओं को सुखा चारा की मात्रा कम दें और दाना की मात्रा बढ़ा दें। दाना में तिलहन अनाज का प्रयोग करें। चारा दाना प्रातः 5:00 बजे और शाम में धुप खत्म होने के बाद ही दें। साफ ठंढ़ा पानी पुरे समय दें। प्रत्येक व्यस्क पषुओं को 50 ग्रम खनीज – विटामिन मिश्रण एवं 50 ग्रम नमक दें। किलनी एवं अठगोढ़वा के नियंत्रण के लिए फ्लूमेथ्रीन इप्रीनोमेक्टीन या अमितराज दवाओं का प्रयोग करें।

आज का अधिकतम तापमानः 36.3 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.1 डिग्री सेल्सियस कम	आज का न्यूनतम तापमानः 17.7 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 3.1 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी